बेहद का वैराग्य - 08

अव्यक्त बापदादा :- (22.11.1987)

➳ _ ➳ <u>जहाँ जीना है वहाँ तक पढ़ाई और सम्पूर्ण बनने का अटेन्शन, बेहद के वैराग वृति का अटेन्शन देना है - इसे भूल जाते हैं। ब्रह्मा बाप को देखा, अन्तिम सम्पूर्ण कर्मातीत स्थिति तक स्वयं पर, सेवा पर, बेहद की वैराग वृति पर, स्टूडेन्ट लाइफ की रीति से अटेन्शन देकर निमित्त बन कर दिखाया।</u> इसलिए आदि से अन्त तक हिम्मत में रहे, हिम्मत दिलाने के निमित्त बने। तो बाप के नम्बरवन मदद के पात्र बन नम्बरवन प्राप्ति को प्राप्त हुए। भविष्य निश्चित होते भी अलबेले नहीं रहे। सदा अपने तीव्र पुरूषार्थ के अनुभव बच्चों के आगे अन्त तक सुनाते रहे। मदद के सागर में ऐसे समा गये जो अब भी बाप समान हर बच्चे को अव्यक्त रूप से भी मददगार हैं। इसको कहते हैं -एक कदम की हिम्मत और पद्मगुणा मदद के पात्र बनना।

➢➢ बेहद के वैराग वृति का अटेन्शन

➳ _ ➳ बेहद की वैराग्य वृत्ति का अटेंशन देना है

→ जहाँ भी हम हैं जब तक हम जीते हैं जहाँ भी बाबा ने हमें रखा है- मधुबन में, सेण्टर में, घर में सम्पूर्ण पढाई भी पढना है, सम्पूर्ण बनने का अटेंशन भी देना है

- इसे हम बच्चे भूल जाते हैं

➳ _ ➳ ब्रह्मा बाबा नंबर वन प्राप्ति को प्राप्त हुए

→ <u>**भविष्य निश्चित था, बाबा को साक्षात्कार भी हुआ, बाबा को पता था की बाबा ही श्रीकृष्ण बनेंगे और श्री नारायण बनेंगे, फिर भी बाबा कभी अलबेला नहीं हुए**</u>

- बाबा सदा तीव्र पुरुषार्थ और सेवा की बातें बच्चों को सुनाते रहे
- अब भी अव्यक्त रूप से बाप समान मददगार हैं
  - इसको कहते हैं -एक कदम की हिम्मत और पद्मगुणा मदद के पात्र बनना

अव्यक्त बापदादा :- (27.11.1987)

➳ _ ➳ ऋषि अर्थात् बेहद के वैराग वृति वाले। एक तरफ सर्व प्राप्ति के अधिकार का नशा और दूसरे तरफ बेहद के वैराग का अलौकिक नशा। जितना ही श्रेष्ठ भाग्य उतना ही श्रेष्ठ त्याग। दोनों का बैलेन्स। इसको कहते हैं राजऋषि। ऐसे राजऋषि बच्चों का बैलेन्स देख रहे थे। अभी-अभी अधिकारीपन का नशा और अभी-अभी वैराग वृति का नशा - इस प्रैक्टिस में कहाँ तक स्थित हो सकते हैं। अर्थात् दोनो स्थितियों का समान अभ्यास कहाँ तक कर रहे हैं - यह चेक कर रहे थे। नम्बरवार अभ्यासी तो सब बच्चे हैं ही। लेकिन समय प्रमाण इन दोनों अभ्यास को और भी ज्यादा से ज्यादा बढ़ाते चलो।

➳ _ ➳ <u>बेहद के वैराग वृति का अर्थ ही है - वैराग अर्थात् किनारा करना नहीं, लेकिन सर्व प्राप्ति होते हुए भी हद की आकर्षण मन को वा बुद्धि को आकर्षण में नहीं लावे।</u> बेहद अर्थात् बेहद मैं सम्पूर्ण सम्पन्न आत्मा बाप समान सदा सर्व कर्मेन्द्रियों की राज्य अधिकारी। इन सूक्ष्म शक्तियो मन-बुद्धि-संस्कार के भी अधिकारी। संकल्प मात्र भी अधीनता न हो। इसको कहते हैं <u>राजऋषि अर्थात् बेहद की वैराग वृति। यह पुरानी देह वा देह की पुरानी दुनिया वा व्यक्त भाव, वैभवों का भाव - इस सब आकर्षण से सदा और सहज दूर रहने वाले</u>

➳ _ ➳ तो राजऋषि अर्थात् सर्व के राज्य अधिकारी राज्य अधिकारी सदा और सहज तब होगा जब ऋषि अर्थात् बेहद के वैराग वृति के अभ्यासी होंगे। वैराग अर्थात् लगाव नहीं।

सदा बाप के प्यारे। यह प्यारापन ही न्यारा बनाता है। बाप का प्यारा बन, न्यारा बन कार्य में आना - इसको कहते हैं बेहद का वैरागी। **बाप का प्यारा नहीं तो न्यारा भी नहीं बन सकते, लगाव में आ जायेंगे। बाप का प्यारा और किसी व्यक्ति वा वैभव का प्यारा हो नहीं सकता। वह सदा आकर्षण से परे अर्थात् न्यारे होंगे।** इसको कहते हैं निर्लेप स्थिति। कोई भी हद की आकर्षण की लेप में आने वाले नहीं। रचना वा साधनों को निर्लेप होकर कार्य में लायें। ऐसे बेहद के वैरागी, सच्चे राजऋषि बने हो? ऐसे नहीं सोचना कि सिर्फ एक वा दो कमजोरी रह गई है, सिर्फ एक सूक्ष्म शक्ति वा कर्मेन्द्रिय कन्ट्रोल में कम है, बाकी सब ठीक है। लेकिन जहाँ एक भी कमजोरी है तो वह माया का गेट है। चाहे छोटा, चाहे बड़ा गेट हो लेकिन गेट तो है ना। अगर गेट खूला रह गया तो मायाजीत जगतजीत कैसे बन सकेंगे?

➳ _ ➳ एक तरफ एक राज्य, एक धर्म की सुनहरी दुनिया का आह्वान कर रहे हो और साथ-साथ फिर कमजोरी अर्थात् माया का भी आह्वान कर रहे हो तो रिजल्ट क्या होगी? दुविधा में रह जायेंगे। इसलिए यह छोटभ् बात नहीं समझो। समय पड़ा है, कर लेंगे। औरों में भी तो बहुत कुछ है, मेरे में तो सिर्फ एक ही बात है। दूसरे को देखते-देखते स्वयं न रह जाओ। 'सी ब्रह्मा फादर' कहा हुआ है, फालो फादर कहा हुआ है। सर्व के सहयोगी, स्नेही जरूर बनो, गुण ग्राहक जरूर बनो लेकिन फालो फादर। ब्रह्मा बाप की लास्ट स्टेज राजऋषि की देखी इतना बच्चों का प्यारा होते भी, सामने देखते हुए भी न्यारापन ही देखा ना। बेहद का वैराग - यही स्थिति प्रैक्टिकल में देखी। कर्मभोग होते भी कर्मेन्द्रियों पर अधिकारी बन अर्थात् राजऋषि बन सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव कराया। इसलिए कहते हैं - 'फालो फादर'। तो अपने राज्य अधिकारियों, राज्य कारोबारियों को सदा देखना है। कोई भी राज्य कारोबारी कहाँ धोखा न दें। समझा?

➢➢ राजऋषि

➳ _ ➳ ऋषि अर्थात् बेहद के वैराग वृति वाले। एक तरफ सर्व प्राप्ति के अधिकार का नशा और दूसरे तरफ बेहद के वैराग का अलौकिक नशा। जितना ही श्रेष्ठ भाग्य उतना ही श्रेष्ठ त्याग। दोनों का बैलेन्स।

➳ _ ➳ राजऋषि अर्थात् बेहद की वैराग वृति। यह पुरानी देह वा देह की पुरानी दुनिया वा व्यक्त भाव, वैभवों का भाव - इस सब आकर्षण से सदा और सहज दूर रहने वाले

➳ _ ➳ बाप का प्यारा नहीं तो न्यारा भी नहीं बन सकते, लगाव में आ जायेंगे। बाप का प्यारा और किसी व्यक्ति वा वैभव का प्यारा हो नहीं सकता। वह सदा आकर्षण से परे अर्थात् न्यारे होंगे।

➳ _ ➳ लेकिन जहाँ एक भी कमजोरी है तो वह माया का गेट है। चाहे छोटा, चाहे बड़ा गेट हो लेकिन गेट तो है ना। अगर गेट खूला रह गया तो मायाजीत जगतजीत कैसे बन सकेंगे?

➳ _ ➳ समय पड़ा है, कर लेंगे। औरों में भी तो बहुत कुछ है, मेरे में तो सिर्फ एक ही बात है।

→ **दूसरों को नहीं देखना है, 'सी ब्रह्मा फादर', फालो फादर**

➳ _ ➳ अपने राज्य अधिकारियों, राज्य कारोबारियों को सदा देखना है। कोई भी राज्य कारोबारी कहाँ धोखा न दें

→ ब्रह्मा बाप समान अपने कर्मेन्द्रियों, मन, बुद्धि की कचहरी करना है, स्वयं की चेकिंग करना है

➢➢ वैराग्य शतकम- श्लोक- 34

➳ _ ➳ विषयों को भोगने में रोगों का डर है, कुल में दोष होने का भय है, धन में राजा का भय है, चुप रहने में दीनता का भय है, बल में शत्रुओं का भय है, सौन्दर्य में बुढ़ापे का भय है, शास्त्रों में विपक्षियों के वाद का भय है, गुणों में

दुष्टों का भय है, शरीर में मौत का भय है, संसार की बनी चीजों में मनुष्यों का भय है, केवल एक चीज में भय नहीं है- वैराग्य में किसी प्रकार का भय नहीं है

→ **यदि मनुष्य विषय सुखों को भोगता है तो उसे अनेक रोगों का भय होता है**

→ यदि चन्दन और शीतल पदार्थों का लेपन किया जाता है तो बाध्य हो जाता है

→ यदि शारीरिक भोग किए जाते हैं तो बल घटता है, शक्ति घटती है, और बहुत अधिक शारीरिक भोग से क्षय रोग भी हो जाता है

→ यदि उच्च कुल में जन्म होता है तो उसमें कोई पतन या उसमें कोई दोष होने का डर लगा रहता है क्योंकि कुल में किसी के भी दुराचारी होने से कुल का नाम बदनाम हो जाता है, कुल का नाम ही डूब जाता है

→ **अधिक धन होने से राजा का डर लगा रहता है की कहीं राजा धन छीन ना ले**

→ चुप रहने में प्रतिष्ठा और दीनता का भय रहता है क्योंकि चुप रहने वालों को सभी दीन- हीन समझ लेते हैं

→ संग्राम में शत्रुओं का भय है

→ यदि सूरत सुन्दर होती है तो सूरत के बिगड़ जाने का भय है

→ बुढ़ापे में रूप-रंग नष्ट हो ही जाता है

→ शास्त्रों के जानने वालों को प्रति पक्षियों का भय रहता है क्योंकि प्रति पक्षी सदा इसे नीचे दिखाना और उसका अपमान करना चाहते हैं

→ पुण्य या सद्गुणों में दुष्टों का भय रहता है, दुष्ट लोग अच्छे से अच्छे कामों में दोष निकालकर उनका उल्टा अर्थ निकालने में लगते हैं, वे निंदा करके गुणी के मूल्य घटाने की भरपूर चेष्टा किया करते हैं

→ **शरीर को मृत्यु का भय सदा लगा रहता है, क्योंकि काया का नाश अवश्यम्भावी है, जो शरीर में आया है जिसने ये शरीर रूपी वस्त्र पहना है उसे अपना ये शरीर छोड़ना ही होगा, ये चोला बदलना और नया पहनना ही होगा**

■ **इस तरह विचार करने से यही सिद्ध होता है की मनुष्यों को सांसारिक सभी पदार्थों में भय ही है**

➳ _ ➳ भय किसमें नहीं है ?

→ **केवल वैराग्य या त्याग अथवा सन्यास ही ऐसा है जिसमें किसी भी बात का भय नहीं है**

→ यूँ तो संसार में जरा भी सुख नहीं, सर्वत्र भय ही भय है, पर दुष्ट और नीचों का भय सभी से भारी है, एक को एक खाने को दौड़ता है, जिसे देखो वही जला करता है, यहाँ ईर्ष्या, द्वेष का बाजार जोरों पर रहता है

■ इस वास्ते ऐसी जगह पर चलकर रहना चाहिए जहाँ कोई ना हो, हमारी बात कोई ना समझे, और हम किसी की भी ना समझे, मकान भी ऐसा हो जिसमें दरवाजे और दीवार ना हो, अर्थात साफ़ जंगल हो, ना हमारा कोई साथी हो ना पडोसी, अगर बीमार हो जाएँ तो कोई खबर लेने वाला भी ना हो तीमारदार या सेवा सुश्रुषा करने वाला ना भी हो, अगर सौभाग्य से मर जाए तो कोई शोक करने वाला भी ना हो

- सुन्दरदास जी कहते हैं अगर आपको सांप डसे, बिच्छू काटे और हाथी मारे तो हर्ज मत समझो, आग में जलने, जल में डूबने, और पहाड़ से गिरने में कोई भी हानि नहीं समझो, ये सब भले हैं

- हानि और खतरा है तो दुष्टों की संगति में, दुष्टों के सोहब्बत में, इसलिए दुर्जन की सोहब्बत मत करो, उसकी संगति अच्छी नहीं, पर आजकल दुष्टों की बहुतायत है, कदम-कदम पर दुर्जनों के दर्शन होते हैं

- इसलिए संसार में दुखी और उदासीन मनुष्य के लिए वन में जाकर रहने में ही शांति है, इस संसार में रहना और इसमें दिल लगाना अच्छा नहीं होता है, पर बिना दिल लगाये काम भी तो नहीं चलता

- **सारांश यही है की सच्ची सुख, शांति चाहते हो तो स्त्री-पुरुष, धन-दौलत, जमीन-जायदाद की ममता छोडकर वैराग्य ले लो और वन में जा बसो और एकमात्र परमात्मा में मन लगाओ**

- **संसार को त्यागने के सिवा सुख की और कोई राह नहीं**

- **मन की राह पर ना चलो, मन को अपने राह पर चलाओ**

- **सच्चा सुख मन के वैराग्य में ही है इस वाक्य को क्षण भर भी ना भूलो**